P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

'सुमेर' कहानी में व्यक्त राहुल जी की मानवीय चेतना

मंजुला शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
त्रिवेणी देवीभालोटिया कॉलेज,
रानीगंज, पश्चिम बंगाल,
भारत

सारांश

मनुष्य का जीवन उसके समाज, जीवन और जगत की अच्छाईयों से जुड़ा होता है। वह अपने आप में दर्शन का केन्द्र होता है। जीवन की जटिलताएँ अपनी गतिशीलता में बेहतर मनुष्य और समाज की ओर जाती है। भारतीय समाज अपने गठन, विभिन्न कालक्रम में उसकी वस्तु स्थिति और विश्वास की प्रक्रिया को लेकर चला है। मानव सृजन शीलता की शुरूवात इतिहास की तह में जाकर आरम्भ होती है। मनुष्य, उसकी चेतना और बेहतर होने की उसकी आकांक्षा ही सृजन का आधार है। विभिन्न कालखंडों की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों और तत्कालीन समाज व्यवस्था में मानवीय चिन्तन के विविध आयाम अपनी मौलिकता लेकर आते हैं। साहित्य और साहित्यकार समाज के नियम.कानूनों की असलियत का पर्दाफाश करते हुए एक नये समाज की रचना पर जोर देत हैं। राहुल सांकृत्यायन अपने सृजन क्रम को अतीत की परंपरा से जोड़कर उसे नये संदर्भों के साथ नई अर्थव्यवस्था और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं। ये सामंती औपनिवेशिक मूल्यों के खिलाफ़ प्रहार करते हुए हर तरह की गैर बराबरी का विरोध करते हैं और समानता को सबसे अहम् सामाजिक मूल्य मानते हैं।

राहुल सांकृत्यायन प्रगतिशील चिंतनधारा और हिन्दी नव जागरण से जुड़े बहु आयामी व्यक्तित्व वाले रचनाकार की 'वोल्गा से गंगा' कहानी संग्रह में कुल 20 कहानियाँ हैं। लेखक ने भारतीय इतिहास के आठ हजार वर्ष, अज्ञात अंधकारमय प्राचीन काल से 1942 तक, लगभग 6000 ई. पूर्व से लेकर बीसवीं सदी के पूर्वार्द्धतक के मानव समाज के ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया को इन कहानियों में चित्रित किया है। सुमेर इस संग्रह की अन्तिम कहानी है जिसमें तत्कालीन राजनीति, पूँजीवाद के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : मनुष्य, समाज, जटिलताएं, मानवीय–चिन्तन, विकास।

प्रस्तावना

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का साहित्य सम्पूर्ण रूप से मानव समाज का प्रतिनिधित्व करता है। इनका सम्पूर्ण जीवन घुमक्कड़ी का था। प्रकृति से इनका प्रेम अनन्य रहा। इन्होंने विभिन्न भाषाओं में साहित्य की भिन्न–भिन्न विधाओं पर लेखनी चलायी। इनकी 'वोल्गा से गंगा' की कहानियाँ उनके अन्वेषक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती हैं।

'सुमेर' 'वोल्गा से गंगा' की अन्तिम कहानी है। 1942 ई0 में प्रकाशित इस कहानी में राहुल जी ने देश की तत्कालीन परिस्थितियों के साथ गाँधी जी के नीतियों का भी विश्लेषण किया है। कहानी का आरम्भ लेखक प्राकृतिक सुषमा के साथ करते हैं। सुमेर और रामबालक ओझा पटना में बढ़ती हुई गंगा के बाँध की रखवाली के समय आपसी वार्तालाप द्वारा समाज के कई विसंगतियों की चर्चा करते हैं। सुमेर का सम्बन्ध एक चमार परिवार से है एवं वह देश की सामाजिक व्यवस्था से क्षुब्ध है। सुमेर अपनी जाति के सन्दर्भ में गाँधी के विचारों से पार्थक्य रखता है ''गाँधी जी का हमारे साथ प्रेम इसीलिए है कि हम हिन्दुओं में से निकल न जायें।[1]'' वह अपनी जाति की दुर्व्यवस्था के लिए ईश्वरात्मक सत्ता को नकारता है ''हम बाजारों में सोनपुर के मेले में पशुओं की तरह बिकते रहे, आज भी गाली–मार खाना, भूखे मरना ही हमारे लिए भगवान की दया बतलाई जाती है। इतना होने पर भी जिस भगवान के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी, उसे माने हमारी बला।''[2] गाँधी जी की अहिंसा नीति से सुमेर शंकित है ''जो अहिंसा किसानों और मजदूरों पर कांग्रेस सरकारों द्वारा चलाई जाती गोलियों का समर्थन करे और फासिस्ट लुटेरों के सामने निहत्था बन जाने के लिए कहे, उसे समझना हमारे लिए असम्भव।[3]''

सुमेर शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद करता है ''हाँ गरीबों की कमाई पर मोटे होने वालों का भारत में नामोनिशान यदि न रहे, तभी हमारी समस्या हल हो सकती है।''[4] चमार जाति के ऊपर हो रहे अमानवीयता के संदर्भ में सुमेर कह उठता है ''हमें दिमागी गुलामी के अड्डे, शोषकों के जबरदस्त पोषक पुरोहितों की दुकानों–इन मन्दिरों में ताला लगवाना चाहिए और उल्टे हमें फँसाने के लिए गाँधीजी उन्हें खुलवाना चाहते हैं..... वर्ण व्यवस्था जैसी मरण–व्यवस्था का भारत में नाम नहीं रहने देना चाहिए, किन्तु गाँधीजी उसकी अनासक्ति योग से लच्छेदार व्याख्या करते हैं''[5] युवा सुमरे के माध्यम से राहुल सांकृत्यायन पूँजीवाद शोषण की नीतियों के विरूद्ध आवाज उठाते हैं उनका आकर्षण साम्यवादी व्यवस्था की ओर है शोषकों के मुखौटे एवं साम्यवाद का विश्लेषण राहुल जी सुमेर के माध्यम से कुछ इस प्रकार करते हैं ''साम्यवाद धर्म का विरोधी है और भारत सदा से धर्म प्राण रहा है जरा इस दिक्कत का भी ख्याल करें सुमेरी जी5 सभी शोषक जबरदस्त धर्मप्राण होते हैं ओझाजी और सभी शोषण शत्रु, धर्म शत्रु घोषित किये जाते हैं यदि साम्यवाद को विदेशी ही मान ले तो भी इसाई, इस्लाम जैसे विदेशी धर्म, रेल, तार, हवाईजहाज, कल–कारखाने जैसी विदेशी चीजें हमारी आँखों के सामने स्वदेशी बनकर मौजूद हैं वैसे ही साम्यवाद भी स्वदेशी हो जाएगा, बल्कि हो गया है।''[6] सुमेर का संघर्ष उस पूरे ''सम्प्रदाय का संघर्ष'' है इसी लड़ाई के साथ मजदूरिन के लड़के और उसकी सारी जमात का भविष्य बँधा हुआ है इसलिए कि यह लड़ाई अब सिर्फ साम्राज्यों का ही फैसला नहीं करेगी। बल्कि शोषण का भी फैसला करेगी।[7] सुमेर यह स्पष्ट करता है कि इस लड़ाई का परिणाम शोषण विरोधी शक्तियों को या तो खतम करना होगा या उनकी शक्ति को इतना प्रबल कर देना कि फिर मुसोलिनी, हिटलर, तोजों, या उनके पिताओं वाल्डविन, चेम्बरलेन, हैलीफेक्स के लिए दुनिया में जगह नहीं रह जाएगी।''[8]

देश के तत्कालीन शासक अंग्रेज से सुमेर कोई आशा नहीं रखता। सोवियत राष्ट्र के साम्यवादी नीतियों से प्रभावित सुमेर भारत के लिए सोचता है। ''यदि हम भारत में जनता का नहीं, शोषकों का शासन कायम करना चाहते हैं तो पाकिस्तान होकर रहेगा। यदि दिमागी और शारीरिक श्रम करने वाली जनता का शासन कायम करना चाहते हैं तो भारत अनेक स्वतन्त्र जातियों का एक अखण्ड देश रहेगा।''[9] कहानी के अन्त में सुमेर फासिस्टों के विरूद्ध युद्ध में जाता है, उसने सौ जापानी विमानों को नष्ट किया। सुमेर और उसके गनर का पता नहीं लगा, किन्तु अपने साथ ही व उस जंगी महापोत को भी लेते गये।''[10]

''राहुल सांकृत्यायन बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे।''[11] लेखक की रचना धर्मिता उसके सृजनात्मकता को और भी पुष्ट करती है ''इसलिए मूल प्रश्न लेखक के उस दृष्टि बिन्दु को निश्चित करने का है। कहानी में घटनाओं का वर्णन चाहे जिस क्रम में किया गया हो क्रम विपर्यय हो अथवा बीच–बीच में अन्य समान्तर प्रसंगों के शाखा सूत्रों का भटकाव, कोई न कोई एक बिन्दु होता है जिसकी ओर सारा वर्णन संकेत करता है।''[12]

राहुल सांकृत्यायन इस कहानी में सुमेर चरित्र के माध्यम से मनुष्य जाति के विकास के विश्लेषण की ओर जाना चाहते हैं। पूँजीवाद मानवता को बाधित करता है और लेखक साम्यवाद एवं समानता के राज्य की इच्छा करते हैं इतिहास से ली गई यह कथा मानव मुक्ति का प्रश्न उठाती है जिसकी प्रासंगिकता आज के दौर में कम नहीं है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सुमेर कहानी में राहुल सांकृत्यायन की प्रगतिशील चिन्ताधारा का अध्ययन करना है।

उपसंहार

साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन के लेखनक्रम में'वोल्गा से गंगा'कहानी संग्रह की कहानियाँ मनुष्य जाति के ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया को दर्शाती है। 1942 ईस्वी में हजारीबाग जेल में लिखी गई कहानियों के विषय का चयन इतिहास से किया गया। इनमें 'सुमेर'कहानी के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन समाज के समस्याओं की जाँच पड़ताल की है। समाज और जीवन के सरोकारों और समकालीन सामाजिक समस्याओं पर आघात करते हुए ये समाज और मानव जीवन की बेहतरी के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। सुमेर के माध्यम से लेखक जातिवादी प्रथा पर प्रहार करते हैं। पूँजीवादी शोषण की नीतियों के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हैं। युवा सुमेर वार्तालाप के क्रम में तत्कालीन गाँधीवादी नीति की बखिया उघाड़ता नज़र आता है। अपनी जाति के ऊपर प्राचीनकाल से चली आ रही शोषण की नीतियों का वह खुलासा करता हुआ तत्कालीन विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नीतियों के सम्दर्भ में अपना विचार व्यक्त करता जाता है। लेखक युवक सुमेर के माध्यम से विद्रोहात्मक स्वर अपनाते हुए साम्यवादी नीति की ओर जाना चाहते हैं। सुमेर का यह संघर्ष व्यक्तिगत न होकर पूरे सम्प्रदाय का संघर्ष है जो सदियों से दासता, अमानवीयता और शोषण का शिकार होता आया है। यह भारत की ही जनता है जो समानता की माँग करती है। मानव मुक्ति के संदर्भ में राहुल जी की यह कहानी आज भी प्रासंगिक है।

पाद टिप्पणी

1. *सांकृत्यायन राहुल 'वोल्गा से गंगा' किताब महल, इलाहाबाद, 1993 पृ0 264*
2. *वही पृ0 264*
3. *वही पृ0 266*
4. *वही पृ0 265*
5. *वही पृ0 267*
6. *वही पृ0 268*
7. *वही पृ0 269*
8. *वही पृ0 270*
9. *वही पृ0 273*
10. *वही पृ0 274, 275*
11. *सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली*
12. *सिंह नामवर, कहानी नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1999 पृ0 110*